Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

UGC Approved Monthly Journal

VOL-IV ISSUE-VIII Aug. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - IV Issue-VIII AUGUST 2017 ISSN 2349-638x Impact Factor 3.025

आधुनिक युग में सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी

अनीता राज
सहायक प्रवकता
गोपी चंद आर्य महिला कॉलेज, अबोहर
rajanita0303@gmail.com

''जन्म हुआ मानवता का,
हां यही तो वह स्थान है।
दी सीख जिन्होंने धर्म की हमको,
तुलसी, कबीर, संत महान हैं।
सस्कृत से संस्कृति हमारी,
हिन्दी से हिन्दुस्तान है।''

विश्व के प्रत्येक राष्ट्र की पहचान का कोई न कोई चिन्ह् होता है जो महत्वपूर्ण चिन्ह् है वह भाषा है। अगर हम भारत की बात करें तो भारत का पहचान चिन्ह् है हिन्दी। हिन्दी का वर्तमान गौरवपूर्ण है। उसकी भूमिका आज भी सामन्य जनों को जोड़ने में सभी भाषाओं की अपेक्षा अधिक कारगार रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी कोई भाषा अगर प्रयोग में लाई गई है तो वह है हिन्दी जिसमें सबसे पहला प्रयास स्वामी विवेकानंद जी द्वारा किया गया व उसके बाद भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपाई जी द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर हिन्दी में भाषण देना। इस तरह अगर विश्व में हिन्दी भाषा में सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है तो भारत में क्यों नही?

सम्राज्यवाद ने खुद मनुष्य का जो व्यापार १८वीं और १९वीं सदी में किया, उसके फलस्वरूप भारत में बड़ी तादाद में मजदूर दूसरे देशो में ले जाए गए। मॉरिशस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका के अन्य कई देशों में जो बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग है वे मुख्यत: हिन्दी भाषी है अथवा ये कहे कि वे हिन्दी जानते है, हिन्दी पढ़ते लिखते है। नेपाल, पाकिस्तान, बग्लादेश, भूटान, वर्मा में तो स्वाभवत: हिन्दी भाषी जनता की संख्या बहुत बढ़ी है। आधुनिक युग मे नई संचार व्यवस्था, आवागमन के नए साधनों की उपलब्धता और जीवन की जरूरतों से प्रेरित होकर इग्लैंड, अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, ईटली, रूस और यूरोप के अन्य अनेक देशों में भी भारत में जा बसे लोगों में हिन्दी भाषी लोग आज रह रहे है। हिन्दी भाषियों की अथवा हिन्दी जानने वालो की यह विशाल संख्या हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय संपर्क का साक्षात्कार कराती है। संख्या की दृष्टि से हिन्दी दुनिया की तीन बड़ी भाषाओं में एक है।

साठ के दशक से हिन्दी द्विभाषिता और अंग्रेजी द्विभाषिता के बीच होड़ के ग्राफ को देखा जा सकता है। शुरूआती दौर में अंग्रेजी का पलड़ा बहुत ज्यादा झुका हुआ नजर आता है, पर अंतराल धीरे—२ लेकिन निश्चित रूप से कम हो रहा है। बढ़ती हुई साक्षरता इसे घटा रही है। १९९१ की जनगणना और २००१ की जनगणना से मिलने वाले द्विभाषिता के आंकड़ो के आधार पर किये गये विश्लेषण से यही संदेश मिलता है। १९९१ की जनगणना दिखाती है कि ८वीं अनुसूची में दर्ज भाषाओं में द्विभाषियों की संख्या कितनी है और उनमें कितने हिन्दी द्विभाषी है और कितने अंग्रेजी द्विभाषी। इन आकंड़ो को पढ़ने के सवाल पर कुछ विवाद है। पॉल ब्रास के

अनुसार उत्तरी और पश्चिमी भाषाएं बरतने वाले द्विभाषी होने के लिए हिन्दी को प्राथमिकता देते है। दक्षिणी और पूर्वी भाषाएं बरतने वालो की प्राथमिकता अंग्रेजी है। यानि भारत द्विभाषिता के मामले में बंटा हुआ है। ब्रॉस को लगता है कि दक्षिण और पूर्वी भाषाओं ने एक 'सांस्कृतिक भाषा' समझकर हिन्दी को खारिज कर दिया है। परन्तु इन आकंड़ो को एक तरीके से पढ़ा जा सकता है। पंजाबी, नेपाली, मराठी, गुजराती और ऊर्दू बरतने वालो के बीच हिन्दी भाषा के मामले में पहले ही अंग्रेजी से बहुत आगे चल रही है। असमी के संदर्भ में हिन्दी आगे नही लेकिन वहां दोनो द्विभाषिताओं के बीच कुछ कम यानि २.७१ प्रतिशत का अंतर है। इसी तरह मणिपुरी व ओड़िया के संदर्भ में अंग्रेजी आगे है परन्तु हिन्दी केवल १.९६ और १.२६ प्रतिशत के बेहद मामूली अंतर से ही पिछड़ रही है। दक्षिण भारतीय भाषाओं के क्षेत्र में अग्रेंजी द्विभाषिता हिन्दी से कही बेहतर है लेकिन आकड़ों की रोशनी में देखने पर यह स्पष्ट होता है कि दक्षिण क्षेत्र में हिन्दी की स्थिति इतनी बुरी नहीं है। सौ फीसदी साक्षरता वाले मलयालम में अंग्रेजी भाषा अगर २४.३५ प्रतिशत है तो हिन्दी भाषा भी १९.०७ फीसदी है। इस आंकड़ो को देखकर किसी भी हिन्दी समर्थक को सुखद आश्चर्य हो सकता है। इसी तरह कन्नड़ भाषी क्षेत्र में यह अंतर सहज तीन फीसदी तथा तेलुगु क्षेत्र में मजह दो फीसदी। दक्षिण भारत में उम्मीद से बेहतर परिणाम प्राप्त करने के पश्चात् हिन्दी जिस क्षेत्र में बहुत अच्छे नतीजे प्राप्त करती हुई दिखती है वह है बंगाल। बंगाल में यह अंतर २.४० प्रतिशत का ही है। इस तरह तीस साल पहले हुए १९६१ की जनगणना में द्विभाषिता के आंकड़ों पर अगर नजर डालते ही पॉल ब्रास द्वारा किया गया सरलीकरण अपने आप खारिज हो जाता है। हिन्दी विरोध के गढ़ समझे जाने वाले बंगाल में अंग्रेजी उस समय भी तीन फीसदी से आगे थी अर्थात् उस दौरान बंगाल में अग्रेंजी द्विभाषिता में जरा भी बढ़ोतरी नही हुई और हिन्दी ने अपनी वृद्धि दर कायम रखी है। १९६१ और १९९१ के बीच दोनों द्विभाषिताओं की वृद्धि दर से स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा की रूपरेखा में उत्तर, मध्य और उत्तर पूर्व के साथ दक्षिण भी जुड़ गया है। १९९१ से २००१ के बीच की अवधि भी बहुत महत्वपूर्ण है। १९६१, १९९१ और २००१ के आंकड़ो के विश्लेषण से यह पता चलता है कि अंग्रेजी के मुकाबले सम्पर्क भाषा बनने के मामले मे अखिल भारतीय पैमाने पर हिन्दी की स्थिति उत्तरोत्तर सुदृढ़ हुई है।

आकंडों के खेल से अलग हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका को स्थापित करने वाले कई तथ्य ओर भी है। और वे तथ्य ज्यादा महत्वपूर्ण है। एक बात तो यह है कि हिन्दी भाषा साहित्य ने पिछली एक सदी में बड़ी तेजी से विकास किया है। वह कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचलना तथा चिंतनपरक साहित्य के क्षेत्रों में इतनी विकसित हुई है, इतनी उपर उठी है कि आज वह किसी भी भाषा के श्रेष्ठ साहित्य से मुकाबला कर सकती है। प्रेमचंद, निराला, जयशंकर प्रसाद, रमचद्रं शुक्ल नागार्जुन आदि के लेखन के अनुवाद दुनिया की विभिन्न भाषाओं में हुए है। इस प्रक्रिया से हिन्दी के जरिए दुनिया की जनता से भारत की जनता का संवेदनात्मक संबंध कायम हुआ है। इतना ही नहीं, हिन्दी के माध्यम से दूसरी भाषाओं के साहित्य का परिचय भी विश्व का हिन्दी सम्प्रदाय प्राप्त करता है। यह कारण है कि दुनिया भर से हिन्दी का अध्ययन आज वे लोग भी कर रहे है जो भारतीय मूल के नहीं है। इस प्रकार आज की परिस्थिति में हिन्दी की एक अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी विकसित हो गई है।

जैसे कि प्रश्न था क्या आधुनिक काल में हिन्दी समाज की महत्वपूर्ण सम्पर्क भाषा बन सकती है? उपयुर्क्त तथ्यों के अनुसार भारत की भाषायी स्थिति और उसमें हिन्दी के स्थान को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी आज भारतीय जनता के बीच राष्ट्रीय संपर्क की भाषा

बन चुकी है यह इसलिए संभव हो सकता है या हो रहा है कि इसे सीखना और व्यवहार में लाना अन्य भाषाओं की अपेक्षा ज्यादा सुविधा जनक और आसान है। साथ ही हिन्दी भाषा की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि यह लोकभाषा की विशेषताओं से सम्पन्न है बड़े पैमाने पर अशिक्षित लोचदार भाषा है। जिससे वह दूसरी भाषाओं में शब्दो, वाक्य संरचना और बोलचालयजन्य आग्रहो को स्वीकार करने में समर्थ है। इसके अलावा ध्यान देने की बात यह है कि हिन्दी में आज विभिन्न भारतीय भाषाओं का साहित्य लाया जा चुका है। भारत की भाषादी विविधता के बीच हिन्दी की भाषायी पहचान मुख्यत: हिन्दी है।

स्वतंत्रता पर हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की महिमा चली थी परन्तु कुछ स्वार्थी लोगो की वजह से यह राजभाषा बन कर रह गई। इस तरह भारत सरकार में हावी नौकरशाही यद्यपि भारत को और हिन्दी को भी अपनी वाजिब भूमिका अदा करने से रोकती है। उसकी भूमिका को कुठिंत करती है। इसके बावजूद जनता का और राष्ट्रीय जरूरतो को आग्रहों का दबाव नौकरशाही को नियंत्रित करता है और हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका को उजागर करता है।

भारत के औद्योगिक प्रतिष्ठानों के आधार पर नगरों और महानगरों में भारत की राष्ट्रीय एकता और सामाजिक संस्कृति का स्वरूप देखने को मिलता है। इसी प्रंसग में कहना चाहती हूँ कि यदि हिन्दी क्षेत्र के राज्य औद्योगिक रूप से ओर ज्यादा विकसित होते हुए तो राष्ट्रीय एकता और भाषायी एकता का आधार और विस्तृत और मजबूत होता। लेकिन आज की स्थिति में भी भारत में हिन्दी की जो राष्ट्रीय भूमिका है उतना भी अन्तर्राष्ट्रीय महत्व को महसूस कराने में समर्थ है।

निष्कर्षत: सर्वग्राहता के गुण ने हिन्दी को जाति, धर्म और प्रान्त से ऊपर उठाकर संपर्क भाषा के आसन पर विराजमान किया है। इससे इसका लचीला स्वरूप काफी सराहनीय रहा है।

''हिन्दी मेरी भाषा है,
हिन्दी मेरी आशा है,
हिन्दी का उत्थान करना,
यही मेरी जिज्ञासा है।''
जय हिन्द, जय हिन्दी।

संदर्भ सूची:—

१.महादेव एल आपटे। सम सोसियोलिंग्विस्टिक आस्पेक्ट्स ऑफ इंटरलिंगुअल कम्युनिकेशन इन इण्डिया।
२.पॉल ब्रास, 'इलीट इंटरेस्ट्स, पॉपुलर पैशसं, ऐंड सोशल पॉवर इन द लेंग्वेज पॉलिटिक्स ऑफ इण्डिया, लेंग्वेज ऐंड पॉलिटिक्स इन इण्डिया।